States if there is adequate demand in the market.

गेहूं और चावल के खरीद-मूल्य और विक्रय-मूल्य में अन्तर

*290. **श्री विष्णु कान्त शास्त्री :** क्या खाद्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) भारतीय खाद्य निगम गेहूं और चावल के खरीद-मूल्य और विक्रय-मूल्य में कितना-कितना अन्तर है;

(ख) क्या इस अन्तर का मुख्य कारण भारतीय खाद्य निगम में खाद्यान्नों के रख-रखाव का भारी खर्च है;

(ग) यदि हां, तो खरीद-मूल्य का कितना प्रतिशत खाद्यान्नों के रख-रखाव पर खर्च होता है; और

(घ) इस खर्च को कम करने के लिए सरकार ने अब तक क्या कदम उठाये हैं और इस संबंध में और क्या-क्या कदम उठाये जायेंगे ?

खाद्य मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री कल्पनाथ राय) : (क) गेहूं और चावल के लिए भारतीय खाद्य निगम के वसूली मूल्य और केन्द्रीय निगम मूल्य इस समय निम्नानुसार हैं :--

(रु०/क्विंटल)

	वसूली मूल्य	केन्द्रीय निर्गम मूल्य (भारतीय खाद्य निगम के गोदामों से)
गेहूं	330.05	402.00
चावल (अखिल भारतीय भारित औसत)		
साधारण	527.00	537.00
बढ़िया	580.00	617.00
उत्तम	624.00	648.00

मजबूत बनाई गई सार्वजनिक वितरण प्रणाली के क्षेत्रों में वितरण करने के लिए सहायता किए जा रहे इन खाद्यान्नों के केन्द्रीय निर्गम मूल्य पर्युक्त मूल्यों से 50 रु० प्रति क्विंटल कम हैं।

(ख) जी, नहीं । यह अन्तर मुख्यतया अभिवृद्ध वसूली प्रासंगिक खर्चों के कारण है । भारतीय खाद्य निगम को ये खर्चे वसूली मूल्यों के अलावा करने पड़ते हैं । इन खर्चों में मुख्यता क्रय कर, मंडी कर, बोरियों के मूल्य और श्रम प्रभार आते हैं और जो कुल मिलाकर, भारतीय खाद्य निगम के नियंत्रण के बाहर होते हैं ।

(ग) प्रश्न नहीं उठता ।

(घ) बफर स्टाक रखने की लागत को कम करने और उनका बेहतर प्रबंध करने के उद्देश्य से भारतीय खाद्य निगम ने भण्डारण क्षमता का इष्टतम उपयोग करने, बढ़ती हुई भंडारण लागत, मार्गस्थ और भण्डारण हानियों आदि को कम करने के लिए गेहूं/चावल की खुले बाजार में बिक्री करने जैसे कई कदम उठाए हैं/उठा रहा है ।

Endangered Varieties of Rice

*291. SHRI SUSHIL KUMAR SAMBHAJIRAO SHINDE :

SHRIMATI VEENA VERMA :

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to State :

(a) whether Government's attention has been drawn to the newsitem which appeared in the Statesman of 24th January, 1994 to the effect that all but 300 of the 50,000 varieties of rice grown in India are endangered and are likely to go extinct in the following decade ; and

(b) if so, what steps are contemplated by Government to protect and preserve these endangered varieties of rice ?

THE MINISTER OF AGRICULTURE (SHRI BALRAM JAKHAR) : (a) Yes, Sir, However the statement which appeared in the Statesman regarding rice varieties becoming extinct is not correct.